चेतन है तू....

(पण्डित डॉ० विवेक जैन, छिन्दवाडा)

चेतन है तू, ध्रुव ज्ञायक है तू।
अनन्त शक्ति का धारक है तू॥
सिद्धों का लघुनन्दन कहा,
मुक्तिपुरी का नायक है तू।
चेतन है तू..... ॥टेक॥

चार कषाय, दुःख से भरी, तू इनसे दूर रहे,
पापों में जावे न मन दृष्टि निज में ही रहे।
चलो चलें अब मुक्ति की ओर,
पंचम गति के लायक है तू॥
चेतन है तू..... ॥1॥

श्री जिनवर से राह मिली, उस पर सदा चलना,
माँ जिनवाणी शरण सदा, बात हृदय रखना।
मुनिराजों संग केलि करे-2
मुक्ति वधू का नायक है तू॥
चेतन है तू..... ॥2॥